Vol 6 Issue 6 Dec 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT Golden Research Thoughts
ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

रागों मे स्त्री तत्वों की संकल्पना

प्रा.मृणाल प्रभाकरराव कडू
संगीत विभाग , जे.डी.पा.सा.महा.दर्यापूर.

प्रस्तावना :–
राग के संदर्भ में कहा गया है कि राग व नियमित ध्वनि विषेश है जो स्वर तथा वर्ण से मंडित है और जो सर्वसाधारण का मनोरंजन करती है। राग का विस्तृत वणण संगीत के कई ग्रंथ के राग के रुप एवं प्रकृति बनी। कई संगीतग्रंथ जैसे – दत्तिलम, संगीत रत्नाकर, संगीत परिजात, स्वरमेल कलानिधी आदि रागों की इस प्रकृति का वर्णण करते है। श्री, वसंत, भैरव , पंचम, मेघ तथा बृहन्नट ये छः पुरुष राग है, इसप्रकार इनकी रागिणियॉं भी होती है। मालश्री, त्रिवेणी ,गौरी,केदारी, मधुमाधवी और पहाडीका ये छः श्री की स्त्रियॉं है। इसी तरह देषी, देवकीरी, वरीटी,तोडीका, ललीता और हिंडोल ये छह वसंत की स्त्रियॉं है। भैरवी , गुजरी, रामकली, गुणकिरी, बंगाली और सैंधवी ये छह भैरव की स्त्रियॉं है। विभाषा, भूपाली,कर्णाटी ,बडहंसिका, मालवी और पट्टमंजीरी ये छह पंचम की स्त्रियॉं है। मल्लारी,सोरठी, सावेरी कौशिकी, गांधारी और पहाडी यह छह मेघ की स्त्रियॉं है। कल्याणी, आभीरी, कामेदी, सारंगी और नटहंम्बीरा यह छह नट्टनारायण की रागिणियॉं है।
किंतु कुछ संगीतकारोंने इन प्रत्येक रागों की पॉंच रागिनियॉं मानी है। शिवमत और कल्लीनाथ मत में राग संख्या छह मानकर प्रत्येक की छह रागिणियॉं मानी है। किन्तु अन्य मतों में छह राग मानकर उनकी पॉंच–पॉंच रागिणियॉं मानते है। अर्थात शिवमत और कल्लीनाथ मत छह राग–छत्तीस रागिणियॉं के सिध्दान्त मानते है और भरतमत

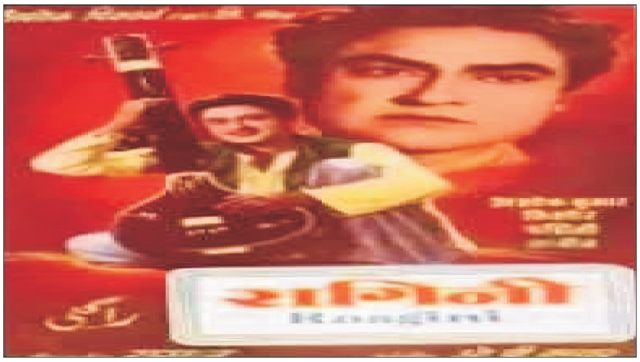

तथा हनुमन्त मत के छह राग–तिस रागिणियॉं के सिध्दान्त का स्विकार किया है। जहॉं संगीतज्ञों ने समय और ऋतुओं के अनुसार गाये जानेवाले राग व रागिणियों का गायन किया वही चित्रकार भी राग–रागिणियॉं ध्यान के आकार को चित्रांकित किए बिना भी अछुते न रहे। जीन सारे चित्रों के रसों का प्रदर्शन साकार रुप में चित्रांकित हुआ जिसे ष्राग का घर ' या रागामाला के नाम से जाना जाता है।

संशोधन की आवश्यकता :–
भारतीय शास्त्रीय संगीत रागप्रधान संगीत है। रागविस्तार क्रिया में रस और भाव का संबंध महत्वपूर्ण है। भावनाओं के आधार से ही रागों की अलग–अलग प्रकृती मानी जाती है। इसलिए भारतीय शास्त्रीय संगीत को भावप्रधान संगीत भी कहॉं जाता है। रस सिध्दान्तों ने भारतीय संगीत को प्रभावित किया है। भाव और रस इनके संबंध में एक महतवपूर्ण बात जो है वो रागों का स्त्री और पुरुष वर्गो में विभाजन किए जाने के पुरावे मिलते है। भारतीय शास्त्रों में प्रत्येक रागों संबंधित एक विशिष्ट देवता या रंगो के वर्णण मिलते है। इसी के आधार से रागरागिणी वर्गीकरण निर्माण हुए । इन राग रागिणीयों का संबंध अलौकिक जग में रहनेवाले देवी देवताओं और लौकीक जग के नायक–नायिकाओं से जोडा जाता है। इनमें से राग–ध्यान परंम्परा का उदय हुआ। इनका फलस्वरुप रागध्यान चित्र और राग–ध्यान मंत्रो की निर्मिती हुई। राग–रागिणी वर्गीकरणों में रागों को स्त्री राग और पुरुश राग इन दो श्रेणीओं में विभाजित किया गया। स्त्री रागों को रागिणी की संज्ञा और पुरुष रागों को राग की संज्ञा दी गई है। राग–रागिणी वर्गिकरण से थाट राग वर्गीकरण तक वैसे ही देवी देवताओं की उपासना से नायक–नाकियकाओं के चित्रों तक भारतीय राग संगीत की प्रगती और विकास के चित्रों तक विकास के धाराओं जो तत्व दिखते है वो है रागों में स्त्री तत्वों की संकल्पना।

संशोधन पध्दती :–
प्रस्तुत शोधनिबंध में स्पष्टी करणात्मक संशोधन पध्दती का प्रयोग किया गया है। इस संशोधन पध्दती से प्रयोग में आए शब्द, भाषा और संज्ञाओ का उचित अर्थ क्या है इसका स्पष्टीकरण किया जाता है। रागों में स्त्री तत्वों की संकल्पना संबंधी किताबे मासिक पत्र–पत्रिकाये, साप्ताहिक, संगीत मासिक इन सभी माध्यमों की सहाय्यता से सामुग्री एकत्रीत कर प्रसतुत शोध–पत्र में सम्मीलीत की गई है।

रागों में स्त्री तत्वों की संकल्पना :–
राग भुपाली :– यह रागिणी एक मनमोहिनी सुंदर युवती के मनोभावों को व्यक्त करती है। यह युवती श्वेत वस्त्रों में सुसज्जित है। उसके शरिर पर सिंदुर के लाल धब्बे दिखाई दे रहे है। उनके गलें में पुष्पहार शोभायमान है। वह अपनी प्रेमी के समिप बैठी प्रेमालाप में व्यस्त है। उनके मुखमंडल से प्यारभरा आनंद झलक रहा है।
राग–खमाज :– आंगण में एक नव–युवती अपने दोनों हाथ जोंडे सिधे खडी है, जिसके सामने भवन के बारमदे में एक चौकी पर चार मुखवाले अर्थात ब्रम्हाजी विराजमान है। जिनके चार हाथ है। उनके एक हाथ में पुस्तक, दुसरा हदयपर,तिसरा पैर के तलवे पर, चौथा हाथ उनके मुख के होठोंपर है, जिसका अर्थ आश्चर्य करने से प्रगट हो रहा है। नवयुवती हाथ जोडे उनसे प्रार्थना कर रही है।
राग आसावरी :– दामोदर पंडीत के अनुसार 'मल्यांचल' के शिखरपर एक नवयुवती बैठी हुई है। मोर के समान वस्त्र धारण की हुई है। गणमुक्ताओं की सुंदर माला धारण किए हुए है। चंदन के वृक्षों से सापों को लेकर जिसने अपने शरिरपर कंकण के समान धारण किया है तथा जिसकी

कान्ती निलोज्जल है (निली आभायुक्त) वह आसावरी है।

राग बिलावल :– एक परम सुंदर युवती हलके निले अथवा गुलाबी वस्त्रों में और आभुषणों से सुसज्जीत दर्पण के सामने साज–सज्जा में व्यस्त है। वह अपनी मधुर प्यार की उत्कंठा के वशीभूत होकर उन्मादभरी गंभीर भावानाओं में इतनी भाव–विभोर हो गई है की उसे अपने समीप में होनेवाली घटनाओं की सुध–बुध नही रही। जो संभवता चंद्रमुखी नवयुवती के श्रृंगार में आपना योगदान दे रही है। ऐसा प्रतित होता है की, चंद्रमुखी नवयुवती अपने प्रियतम से मिलने के पूर्व शिघ्र अपनी सखीयों की मदत से अना पूर्ण श्रृंगार कर लेना चाहती है। जो की अपना सुंदर रुप शिशे में देखकर अपने आप में ही खोई–खोई सी प्रतित होती है।

राग मारवा :– यह रागिणी कुमारवस्था की एक रुप लावण्ययुक्त युवती की मनोभाव को व्यक्त करती है। वह सुनहरी पोशाख पहने हुई है, उसके गले में पुष्पहार शोभायमान है। वह अपने प्रेमीद्वारा निश्चित समयपर उससे कुछ सुनने की प्रतिक्षा कर रही है। इसी प्रकार एक सुंदर रुपवान युवती सुंदर अलंकारिक सुनहरी कालीन पर विराजमान है। जिसे अपने प्रियतम के आने की प्रतिक्षा में चिंतीत कर दिया है, जीस कारण उसने अपनी पैरों को एक वस्त्र से बॉंध लिया है। उसके सामने सखियॉ उसे कोई संदेश दे रही है। जिसमें से एक के हाथ में पुष्पमाला है जो उसे झुककर पकडी हुई है, दुसरी युवती जिसके एक हाथ में चंवर और दुसरा हाथ हवा में उपर की और उठ रहा है जो की कोई शुभ समाचार लेकर आई है।

राग धनाश्री :– दो युवतीयॉ है जिसमें एक शोकग्रस्त, विरहाकुल, सुंदर युवती गुलाबी पोशाख धारण कि है। दुसरी युवती जो उसके समीप ही बैठी है उसे आश्चर्य भावमुद्रा से कुछ समझाा रही है। पं.दामोदर के वर्णनानुसार "जो सुंदर है,दुर्वाबल केसमान जिसका श्यामवर्ण का शरिर है जो विरह से त्रस्त है, जिसके गाल सफेद हो गये है , और नेत्रों में प्रवाहित होनेवाली अश्रुधारा से जिसके तन भीग जाते है ऐसी रागिणी धनाश्री है।

राग भैरवी :– पं. दामोदर के अनुसार रमनिय कैलाश पर्वत के शिखर पर स्पटीक मनी के आसनपर बैठकर, खिले हुए कमल के फुल से जो महादेवजी का पुजन करती है। जिसके हाथ में घनवाद्य (मंजीरा) है, जिसका वर्ण पिला है तथा जिसके नेत्र विशाल है ऐसी भैरव की भार्या भैरवी है।

सारांश :–

रागों की स्त्री–पुरुष वर्गो में विभाजन ,देवी–देवताओं के रुप में चिन्तन– मनन और नायक–नायिकाओं के रुप में रागों के माध्यम से चित्रण। वर्तमान शास्त्रीय संगीतसे रागिणी शब्द लुप्त होना और राग शब्द को महत्व देना ये कही ना कही पुरुषप्रधान समाज के बिचारों का परिणाम है। और दुसरी तरफ रागों का स्त्री रुप का अर्थात रागिणी का प्रचार विलासमय और श्रृंगारिक विचारों का दिखाई देता है। कुछ भी हो ये स्पष्ट है की भारतीय राग संगीत ने स्त्री–पुरुष तत्व, देवी–देवता और नायक–नायिकाओं के रुप में राग–ध्यान विषय के माध्यम से भारतीय दर्शन की विशालता दिखाकर साहित्य और कला जगत में एक सुवर्ण युग दिखाई देता है।

संदर्भ :–

1.संगीत कलाविरहा मासिक –एप्रील 2016
2.भारतीय महिला सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन – संपादक डॅा. राजकुमार
3.संगीत विशारद – वसंत
4.टाजचे अध्यापन – लीला पाटील

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org